राजा मानसिंह तोमर

राजा मानसिंह तोमर ने ग्वालियर - नरेश के रूप में सन् 1486 से सन् 1518 तक राज्य किया। वे केवल वीर योद्धा ही नहीं थे, बल्कि बड़े संगीत प्रेमी और संगीत ज्ञाता थे। बैजू, बरुशू, चरजू, भगवान, रामदास, आदि संगीतज्ञ उनके दरबार में नियुक्त थे। ग्वालियर से 11 मील दूर राई गाँव में मृगनयनी नामक एक गूजर बालिका रहती थी। वे उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो गये और उससे शादी करने का प्रस्ताव किया। मृगनयनी के पिता इसे सुनकर बड़े प्रसन्न हुये, किन्तु उसने राजा के समक्ष दो शर्तें रखवीं। पहली शर्त यह थी कि, मृगनयनी के लिए अलग महल बनवाया जाये और दूसरी शर्त यह थी कि उसके गाँव से ग्वालियर तक एक नहर बनवाई जाय और वहाँ से नहर द्वारा शुद्ध जल ग्वालियर पहुँचे। उनकी दोनों शर्तें मानसिंह ने स्वीकार की और उनकी शादी हो गई। शादी के बाद मृगनयनी बैजूबावरा से संगीत की शिक्षा प्राप्त करने लगीं। राजा मानसिंह ने ग्वालियर संगीत विद्यापीठ की स्थापना की जहाँ संगीत की शिक्षा दी जाती थी। बैजू ने राग - गूजरीतोड़ी मंगलगूजरी, मृगनयनी तोड़ी, दुगल गूजरी आदि राग मृगनयनी के नाम पर बनाये।

Scanned with CamScanner

राजा मानसिंह प्रखर बुद्धि के प्रतिभावान व्यक्ति थे उन्होंने ~~इस~~ उस समय जनता के बदलते रुचि को समझा और संगीत की प्रतिष्ठा को बनाये रखने हेतु ध्रुपद का आविष्कार किया। ध्रुपद के जन्म से पखावज का प्रयोग बढ़ा। उन्होंने 'मान कौतूहल' नामक एक संगीत ग्रन्थ की रचना की और उसमें अपने गायक - वादकों की सहायता भी ली। इसका अनुवाद 1673 में फकीरुल्ला ने किया और उसका नाम संगीत दर्पण रखवा। उनके ध्रुपद आविष्कार के सम्बन्ध में फकीरुल्ला ने लिखा है कि भविष्य में राजा मानसिंह जैसा गायन शास्त्र में प्रवीण व्यक्ति होना असम्भव है जो ध्रुपद जैसे गीत की रचना कर सके।

'मान कौतूहल' में दिये गये पदों से उनके संगीत और साहित्य ज्ञान का अनुमान लगाया जा सकता है। इस समय इसकी मूल प्रतिलिपि प्राप्त नहीं है। सन् 1519 में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से संगीत जगत को जो क्षति पहुँची, उसकी पूर्ति कभी भी नहीं हो सकती।

Scanned with CamScanner